By
Rahul Kumar Jha
Dept.of Political Science

Lecture-4

Topic - Liberalism

Class - B.A. Degree - III (Hons., P-VIII D)

Subject - Political science

Date - 8Apr.2021

By Rahul Kumar Jha.

उदारवाद :-

एडम स्मिथ की पुस्तक 'राष्ट्रों की सम्पत्ति' 1776 जो अमेरिका की स्वतंत्रता के घोषणापत्र के समय प्रकाशित हुई को आर्थिक उदारवाद की बाइबल माना जाता है। मानववादी उदारवाद का विकास बेन्थम तथा जेम्स मिल के द्वारा किया गया है। माण्टेस्क्यू की रचना 'The spirit of Laws' भी उदारवाद के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। रूसो का यह कथन कि 'व्यक्ति स्वतंत्र पैदा हुआ है लेकिन उसके पैरों में हर जगह बेड़ियाँ हैं' उदारवाद के प्रति उसके आग्रह को व्यक्त

करता है। और दलों को 'लोकप्रिय प्रभुसत्ता की अवधारणा' भी उदारवादी दर्शन से स्वीकार रखती है।

उदार आदर्शवादी विचारक टी.एच. ग्रीन को 20वीं सदी के उदारवाद का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। बीसवीं सदी का उदारवाद अपने प्राचीन रूप से कुछ विशेषताएँ समेटे हुए हैं समसामयिक या आधुनिक उदारवाद निर्वाच्य व्यक्तिगत स्वतंत्रता राज्य के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण का समर्थन नहीं है। यह सकारात्मक स्वतंत्रता की बात करता है। इस अवधारणा में व्यक्ति और राज्य के बीच किसी तरह का कोई टकराव नहीं है बल्कि व्यक्ति और राज्य दोनों के विकास की बात कही गई है। यही बात आज के कल्याणकारी राज्य में भी लागू होती है।

आधुनिक उदारवाद व्यक्ति की स्वतंत्रता और राज्य के साथ उसके संबंध एवं कार्यक्षेत्र के बारे में सकारात्मक दृष्टिकोण लिए हुए है। राज्य और व्यक्ति के हित को एक माना गया है। दोनों के बीच किसी तरह का कोई टकराव नहीं है।

आधुनिक समय में उदारवाद व्यक्ति की बजाय समाज के हित को प्राथमिकता देता है। इसी कारण आज राज्य को 'कल्याणकारी राज्य के लक्ष्य' को प्राप्त करने के लिए उदारवादी विधायक स्वतंत्रता प्रदान करते हैं, चाहे इसके लिए राज्य को मानव की व्यक्तिगत स्वतंत्रता का कुछ हनन ही क्यों न करना पड़े। इस प्रकार नवीन उदारवाद का दृष्टिकोण राज्य के प्रति सकारात्मक है, नकारात्मक नहीं।

CHAPTER CONTINUES----